अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस

डॉ. भूपत राम

*

कला जगत में कुछ तिथियाँ अनजाने ही कई कलात्मक जीवन यात्राओं को एक सूत्र में पिरो देती हैं। 11 मई एक ऐसी ही तिथि है, जो न केवल सृजन का उत्सव मनाती है बल्कि कला की दुनिया में महत्वपूर्ण योगदान देने वाली दो प्रतिभाओं की पुण्यतिथि के रूप में भी अंकित है। यह दिन हमें दो भिन्न पीढ़ियों और कलात्मक शैलियों का प्रतिनिधित्व करने वाले दो मूर्तिकारों - जॉर्ज मैटलैंड स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस - की याद दिलाता है। स्टेनली, जिनकी कला ने हॉलीवुड के सुनहरे युग को परिभाषित करने में मदद की और जिनकी प्रतिष्ठित ऑस्कर प्रतिमा आज भी वैश्विक सिनेमाई उत्कृष्टता का प्रतीक है, का निधन 11 मई, 1970 को हुआ। वहीं, दूसरी ओर, रॉबर्ट थॉमस, एक ऐसे मूर्तिकार जिन्होंने अपनी विशिष्ट शैली और सार्वजनिक कलाकृतियों के माध्यम से समकालीन मूर्तिकला में अपनी पहचान बनाई, ने 11 मई, 1999 को इस दुनिया को अलविदा कहा।

भले ही इन दोनों कलाकारों के जीवन और कार्यक्षेत्र भौगोलिक और शैलीगत रूप से भिन्न रहे हों, कला के प्रति उनका समर्पण और उनकी सृजनात्मकता उन्हें एक अदृश्य धागे से जोड़ती है। स्टेनली की कृतियाँ जहाँ अमेरिकी स्वप्न और ग्लैमर का प्रतिनिधित्व करती हैं, वहीं थॉमस की कलाकृतियाँ मानवीय भावनाओं और स्थानीय संस्कृति की गहराइयों को टटोलती प्रतीत होती हैं। 11 मई का दिन हमें इन दो मूर्तिकारों द्वारा छोड़ी गई समृद्ध कलात्मक विरासत पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है।

यह आलेख इन दोनों मूर्धन्य कलाकारों के जीवन, उनकी कलात्मक यात्रा, प्रमुख कृतियों, शैलीगत विशेषताओं और कला जगत पर उनके अमिट प्रभाव का विस्तृत अन्वेषण करेगा। हम जॉर्ज स्टेनली की हॉलीवुड बाउल की भव्य "म्यूज़" मूर्तियों से लेकर ऑस्कर की सुनहरी चमक तक की कहानी और रॉबर्ट थॉमस के उन कार्यों की पड़ताल करेंगे जिन्होंने उन्हें अपने समय का एक महत्वपूर्ण मूर्तिकार बनाया।

जॉर्ज मैटलैंड स्टेनली - हॉलीवुड की कलात्मक धरोहर और ऑस्कर का अमर शिल्पी

जॉर्ज मैटलैंड स्टेनली (George Maitland Stanley) का नाम अमेरिकी मूर्तिकला, विशेष रूप से सार्वजनिक कला और प्रतिष्ठित डिज़ाइन के क्षेत्र में, आदर के साथ लिया जाता है। उनका जन्म 26 अप्रैल, 1903 को अमेरिका के लुइसियाना राज्य के एक छोटे से शहर इओटा में हुआ था। हालांकि, उनकी कलात्मक कर्मभूमि कैलिफ़ोर्निया बनी, जहाँ उन्होंने अपनी सबसे प्रसिद्ध कृतियों को आकार दिया, जिनमें हॉलीवुड बाउल की प्रतिष्ठित "म्यूज़" प्रतिमाएँ और विश्व प्रसिद्ध ऑस्कर अवॉर्ड की प्रतिमा शामिल हैं। 11 मई, 1970 को उनके निधन ने कला जगत में एक शून्य छोड़ दिया, लेकिन उनकी कृतियाँ आज भी उनकी प्रतिभा का बखान करती हैं।

प्रारंभिक जीवन, शिक्षा और कलात्मक प्रेरणा

जॉर्ज स्टेनली का बचपन ग्रामीण लुइसियाना में बीता, लेकिन कला के प्रति उनका रुझान उन्हें कम उम्र में ही कैलिफ़ोर्निया ले आया। उन्होंने अपनी औपचारिक कला शिक्षा लॉस एंजिल्स के ओटिस आर्ट इंस्टीट्यूट (अब ओटिस कॉलेज ऑफ़ आर्ट एंड डिज़ाइन) में प्राप्त की, जो उस समय पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रमुख

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

कला संस्थानों में से एक था। यहाँ उन्होंने मूर्तिकला की बारीकियों को सीखा और विभिन्न माध्यमों के साथ प्रयोग किए। उनके शिक्षकों ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उन्हें अपनी शैली विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

स्टेनली की प्रारंभिक कला पर 20वीं सदी की शुरुआत की प्रमुख कलात्मक धाराओं, विशेष रूप से आर्ट डेको (Art Deco) और शास्त्रीय यथार्थवाद (Classical Realism) का प्रभाव देखा जा सकता है। आर्ट डेको की विशेषताएँ, जैसे कि ज्यामितीय रूप, सुव्यवस्थित रेखाएँ और आधुनिकता का भाव, उनके कुछ कार्यों में स्पष्ट रूप से झलकती हैं। वहीं, मानव शरीर रचना और शास्त्रीय सौंदर्य के प्रति उनका सम्मान उनके यथार्थवादी चित्रण में दिखाई देता है।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, स्टेनली ने एक स्वतंत्र मूर्तिकार के रूप में अपना करियर शुरू किया। वे जल्द ही दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया के कला परिदृश्य में एक सक्रिय सदस्य बन गए। उन्होंने विभिन्न सार्वजनिक और निजी परियोजनाओं पर काम किया, जिससे उन्हें अपनी कला को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने का अवसर मिला। उनकी प्रतिभा न केवल बड़ी स्मारकीय मूर्तियों को गढ़ने में थी, बल्कि वे छोटी, अधिक अंतरंग कृतियों को भी उतनी ही कुशलता से बनाते थे। इस दौर में उन्होंने कई पोर्ट्रेट बस्ट और सजावटी कलाकृतियाँ भी बनाईं, जिनसे उनकी तकनीकी दक्षता और कलात्मक दृष्टि का पता चलता है।

कलात्मक यात्रा और शैलीगत विकास

जॉर्ज स्टेनली की कलात्मक यात्रा उनके समय के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों से भी प्रभावित हुई। 1920 और 1930 का दशक, जिसे "रोरिंग ट्वेंटीज़" और महामंदी के दौर के रूप में जाना जाता है, कला और डिजाइन में नए प्रयोगों का समय था। स्टेनली ने इन प्रवृत्तियों को आत्मसात किया, लेकिन अपनी एक विशिष्ट शैली भी बनाए रखी।

उनकी शैली की प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:

1. शास्त्रीयता और आधुनिकता का संतुलन: स्टेनली अपनी मूर्तियों में शास्त्रीय सौंदर्य और आनुपातिकता को महत्व देते थे, लेकिन साथ ही वे आधुनिक डिजाइन तत्वों को भी शामिल करने से नहीं हिचकिचाते थे। यह संतुलन उनकी कृतियों को एक कालातीत अपील प्रदान करता है।

2. मानव रूप का कुशल चित्रण: वे मानव शरीर की संरचना और गति को सटीकता और संवेदनशीलता के साथ पकड़ने में माहिर थे। उनकी "म्यूज़" प्रतिमाएँ इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जहाँ आकृतियों की मुद्राएँ और भाव जीवंत लगते हैं।

3. माध्यम पर महारत: स्टेनली ने कांस्य, पत्थर और अन्य सामग्रियों के साथ काम किया। वे प्रत्येक माध्यम की विशेषताओं को समझते थे और उनका प्रभावी ढंग से उपयोग करते थे ताकि उनकी कलात्मक दृष्टि को साकार किया जा सके।

4. प्रतीकात्मकता: उनकी कई कृतियों में गहरे प्रतीकात्मक अर्थ निहित हैं। ऑस्कर प्रतिमा, उदाहरण के लिए, सिनेमाई उपलब्धि और उत्कृष्टता का प्रतीक बन गई है।

1930 के दशक के दौरान, स्टेनली ने वर्क्स प्रोग्रेस एडमिनिस्ट्रेशन (WPA) के तहत कई सार्वजनिक कला परियोजनाओं पर भी काम किया। महामंदी के दौरान कलाकारों को रोजगार प्रदान करने के लिए शुरू की गई इस पहल ने उन्हें बड़े पैमाने पर काम करने और अपनी कला को आम जनता के लिए सुलभ बनाने का अवसर

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

दिया। इन परियोजनाओं ने न केवल उनकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया बल्कि उन्हें एक सार्वजनिक कलाकार के रूप में भी स्थापित किया।

प्रमुख कृतियाँ

जॉर्ज स्टेनली की कलात्मक विरासत में कई महत्वपूर्ण कृतियाँ शामिल हैं, लेकिन कुछ ऐसी हैं जिन्होंने उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई:

- "म्यूज़ ऑफ़ म्यूज़िक, डांस, ड्रामा" (Muse of Music, Dance, Drama) – हॉलीवुड बाउल (1940): लॉस एंजिल्स के प्रतिष्ठित हॉलीवुड बाउल के प्रवेश द्वार पर स्थित यह फव्वारा और मूर्ति समूह स्टेनली की सबसे महत्वाकांक्षी और प्रशंसित सार्वजनिक कलाकृतियों में से एक है। मूल रूप से 1930 के दशक के अंत में संकल्पित और 1940 में समर्पित, यह ग्रेनाइट की तीन विशाल आकृतियों को दर्शाता है - संगीत, नृत्य और नाटक की देवियाँ (Muses) - जो एक बड़े फव्वारे के केंद्र में स्थित हैं।

o संगीत की म्यूज़ को एक वीणा या लायर जैसे वाद्य यंत्र के साथ दर्शाया गया है, जो उसकी कलात्मक प्रेरणा का प्रतीक है। उसकी शांत और ध्यानमग्न मुद्रा संगीत की आध्यात्मिक शक्ति को व्यक्त करती है।

o नृत्य की म्यूज़ को एक गतिशील और लयबद्ध मुद्रा में उकेरा गया है, जो नृत्य की ऊर्जा और प्रवाह को दर्शाता है। उसके शरीर की वक्रता और वस्त्रों की सिलवटें गति का भ्रम पैदा करती हैं।

o नाटक की म्यूज़ को दो मुखौटों - त्रासदी और कॉमेडी - के साथ चित्रित किया गया है, जो नाट्य कला के दो प्रमुख पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। उसकी अभिव्यक्ति में चिंतन और भावना का मिश्रण है। ये मूर्तियाँ लगभग 200 टन ग्रेनाइट से बनी हैं और इनकी ऊँचाई लगभग 15 फीट है। स्टेनली ने इन आकृतियों को एक सरल लेकिन शक्तिशाली शैली में तराशा है, जो आर्ट डेको और नियो-क्लासिकल प्रभावों का मिश्रण दिखाती है। फव्वारे का डिज़ाइन भी मूर्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है, जिससे एक समग्र और प्रभावशाली दृश्य अनुभव होता है। यह कृति न केवल हॉलीवुड बाउल की पहचान बन गई है, बल्कि यह लॉस एंजिल्स की कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी है। इस कृति ने स्टेनली को एक प्रमुख स्मारकीय मूर्तिकार के रूप में स्थापित किया।

- ऑस्कर प्रतिमा (The Academy Award Statuette - "Oscar") (1928-29): यकीनन जॉर्ज स्टेनली की सबसे विश्वव्यापी रूप से पहचानी जाने वाली कृति ऑस्कर प्रतिमा है। 1927 में एकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज (AMPAS) की स्थापना के बाद, अकादमी ने सिनेमाई उपलब्धियों को सम्मानित करने के लिए एक पुरस्कार बनाने का निर्णय लिया। एमजीएम स्टूडियो के कला निर्देशक सेड्रिक गिबन्स ने एक नाइट की आकृति का प्रारंभिक डिज़ाइन तैयार किया जो एक फिल्म रील पर खड़ा था और धर्मयोद्धा की तलवार पकड़े हुए था। इस डिज़ाइन को त्रि-आयामी रूप देने का कार्य जॉर्ज स्टेनली को सौंपा गया। स्टेनली ने गिबन्स के स्केच के आधार पर मिट्टी में प्रतिमा को ढाला। कहा जाता है कि मैक्सिकन अभिनेता और फिल्म निर्माता एमिलियो "एल इंडियो" फर्नांडीज ने इस प्रतिमा के लिए मॉडल के रूप में काम किया था, हालांकि इस दावे पर कुछ विवाद भी रहा है। स्टेनली ने प्रतिमा को एक चिकनी, सुव्यवस्थित आर्ट डेको शैली में तराशा। प्रतिमा 13.5 इंच (34.3 सेमी) लंबी है और इसका वजन 8.5 पाउंड (3.856 किलोग्राम) है। यह कांस्य से बनी होती है और इस पर 24 कैरेट सोने की परत चढ़ाई जाती है। प्रतिमा एक योद्धा को दर्शाती है जो एक फिल्म रील पर खड़ा है, जिसके पाँच स्पोक अकादमी की पाँच मूल शाखाओं - अभिनेता, निर्देशक, निर्माता, तकनीशियन और लेखक -

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , *खंड* 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

का प्रतिनिधित्व करते हैं। पहली ऑस्कर प्रतिमाएँ 16 मई, 1929 को हॉलीवुड रूजवेल्ट होटल में आयोजित पहले अकादमी पुरस्कार समारोह में प्रदान की गईं। तब से, यह सुनहरी प्रतिमा फिल्म उद्योग में सर्वोच्च सम्मान का प्रतीक बन गई है। स्टेनली के डिज़ाइन की सादगी और प्रतिष्ठित शक्ति ने इसे समय की कसौटी पर खरा उतारा है और यह आज भी दुनिया भर में लाखों लोगों द्वारा तुरंत पहचानी जाती है।

- अन्य महत्वपूर्ण कार्य: इन दो प्रमुख कृतियों के अलावा, स्टेनली ने कई अन्य सार्वजनिक और निजी मूर्तियों, स्मारकों और वास्तुशिल्प सजावटों का निर्माण किया। इनमें सर आइजैक न्यूटन की एक प्रतिमा ग्रिफ़िथ वेधशाला, लॉस एंजिल्स में स्थापित है, जो विज्ञान के प्रति उनके सम्मान को दर्शाती है। उन्होंने कैलिफ़ोर्निया और उसके बाहर विभिन्न इमारतों और पार्कों के लिए भी काम किया। उनके कार्यों में अक्सर एक स्मारकीय गुणवत्ता और तकनीकी परिशुद्धता होती थी जो उनके समकालीनों के बीच उन्हें विशिष्ट बनाती थी।

विरासत और प्रभाव

जॉर्ज स्टेनली की विरासत अमेरिकी मूर्तिकला, विशेष रूप से 20वीं सदी के मध्य की सार्वजनिक कला में उनके योगदान में निहित है। हॉलीवुड बाउल की "म्यूज़" जैसी उनकी स्मारकीय कृतियाँ न केवल कला के नमूने हैं, बल्कि वे सामुदायिक पहचान और सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक भी बन गई हैं। हालांकि, यह ऑस्कर प्रतिमा है जिसने उनके नाम को कला और सिनेमा के इतिहास में अमर कर दिया है। एक ऐसी प्रतिमा डिजाइन करना जो एक पूरे उद्योग की आकांक्षाओं और उपलब्धियों का प्रतीक बन जाए, एक दुर्लभ उपलब्धि है। स्टेनली के काम ने दिखाया कि कैसे कला रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन सकती है और कैसे एक अच्छी तरह से डिजाइन की गई वस्तु सांस्कृतिक प्रतीक बन सकती है। उनकी कलाकृतियाँ आज भी संग्रहालयों, सार्वजनिक स्थानों और निजी संग्रहों में मौजूद हैं, जो उनकी तकनीकी कुशलता और कलात्मक दृष्टि की गवाही देती हैं।

11 मई, 1970 - एक युग का अंत

11 मई, 1970 को जॉर्ज मैटलैंड स्टेनली का 67 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने अपने पीछे एक समृद्ध कलात्मक विरासत छोड़ी, जिसने न केवल उनके समय के कला जगत को प्रभावित किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनी। उनकी मृत्यु ने एक ऐसे कलाकार को हमसे छीन लिया जिसने अमेरिकी पश्चिम तट की कला और संस्कृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हॉलीवुड की चमक-दमक से लेकर सार्वजनिक स्मारकों की गरिमा तक, स्टेनली की कला का प्रभाव स्थायी है।

भाग 2: रॉबर्ट थॉमस - मानवीय संवेदनाओं और वेल्श विरासत के मूर्तिकार

रॉबर्ट थॉमस (Robert Thomas) एक प्रतिष्ठित वेल्श मूर्तिकार थे, जिनका जन्म 1 अगस्त, 1926 को साउथ वेल्स के कुमपार्क (Cwmparc) में हुआ था। वे अपनी कांस्य मूर्तियों, विशेष रूप से मानव आकृतियों और सार्वजनिक स्मारकों के लिए जाने जाते थे, जिनमें अक्सर वेल्श संस्कृति और इतिहास के तत्व शामिल होते थे। 11 मई, 1999 को उनके निधन से वेल्श कला जगत ने एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर खो दिया, लेकिन उनकी कृतियाँ वेल्स और उससे बाहर कई सार्वजनिक स्थानों पर आज भी उनकी कलात्मक दृष्टि और मानवीय संवेदनाओं को दर्शाती हैं।

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , *खंड* 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

प्रारंभिक जीवन, शिक्षा और कलात्मक अभिरुचि

रॉबर्ट थॉमस का जन्म एक खनन समुदाय में हुआ था, और उनके प्रारंभिक जीवन के अनुभवों ने उनकी कलात्मक संवेदनाओं को गहराई से प्रभावित किया। साउथ वेल्स की घाटियों का औद्योगिक परिदृश्य, वहाँ के लोगों का कठोर जीवन और सामुदायिक भावना उनके मानस में गहराई तक समा गए। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उन्होंने रॉयल नेवी में सेवा की, जिसके बाद उन्होंने कला के क्षेत्र में अपना करियर बनाने का फैसला किया।

युद्ध के बाद, थॉमस ने 1947 से 1950 तक कार्डिफ़ कॉलेज ऑफ़ आर्ट में अध्ययन किया। यहाँ उन्हें मूर्तिकला की पारंपरिक तकनीकों में महारत हासिल करने का अवसर मिला। इसके बाद, उन्होंने 1950 से 1952 तक लंदन के प्रतिष्ठित रॉयल कॉलेज ऑफ़ आर्ट में अपनी पढ़ाई जारी रखी, जहाँ उन्होंने फ्रैंक डॉब्सन और जॉन स्केपिंग जैसे प्रसिद्ध मूर्तिकारों के सानिध्य में अपनी कला को और निखारा। इन संस्थानों में प्राप्त शिक्षा ने उन्हें शास्त्रीय तकनीकों के साथ-साथ समकालीन कलात्मक प्रवृत्तियों की भी समझ प्रदान की।

रॉबर्ट थॉमस की कला पर अगस्टे रोडिन और जैकब एपस्टीन जैसे महान मूर्तिकारों का प्रभाव देखा जा सकता है, विशेष रूप से मानव शरीर की भावनात्मक और अभिव्यंजक क्षमता को पकड़ने की उनकी क्षमता में। वे मानव रूप को अपनी कला का केंद्रीय विषय मानते थे और इसके माध्यम से विभिन्न मानवीय भावनाओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को व्यक्त करने का प्रयास करते थे।

कलात्मक विकास और शैलीगत पहचान

रॉबर्ट थॉमस की शैली मुख्य रूप से आलंकारिक (figurative) थी, और उन्होंने कांस्य को अपने पसंदीदा माध्यम के रूप में अपनाया। कांस्य की ढलाई की प्रक्रिया उन्हें अपनी आकृतियों में सूक्ष्म विवरण और बनावट जोड़ने की अनुमति देती थी, जिससे उनकी मूर्तियों में एक जीवंत और स्पर्शनीय गुणवत्ता आती थी।

उनकी शैली की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. मानवीयता और सहानुभूति: थॉमस की मूर्तियों में अक्सर आम लोगों, विशेष रूप से वेल्श श्रमिकों, महिलाओं और बच्चों का चित्रण होता है। वे इन पात्रों को गरिमा और सहानुभूति के साथ प्रस्तुत करते हैं, उनके दैनिक जीवन के संघर्षों और खुशियों को दर्शाते हैं।

2. गति और गतिशीलता: भले ही उनकी मूर्तियाँ स्थिर हों, उनमें अक्सर गति और ऊर्जा का आभास होता है। वे आकृतियों की मुद्राओं और भाव-भंगिमाओं के माध्यम से एक कहानी या भावना व्यक्त करने में कुशल थे।

3. सार्वजनिक कला पर जोर: थॉमस ने कई महत्वपूर्ण सार्वजनिक कलाकृतियाँ बनाईं, जिन्हें वेल्स और इंग्लैंड के विभिन्न शहरों में स्थापित किया गया। वे मानते थे कि कला को केवल दीर्घाओं और संग्रहालयों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि यह सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए।

4. वेल्श पहचान का चित्रण: उनकी कई कृतियों में वेल्श संस्कृति, इतिहास और मिथकों के तत्व शामिल हैं। वे अपनी कला के माध्यम से अपनी वेल्श विरासत को सम्मानित और संरक्षित करना चाहते थे। उदाहरण के लिए, उनकी कुछ मूर्तियाँ वेल्श खनिकों या प्रसिद्ध वेल्श हस्तियों को श्रद्धांजलि अर्पित करती हैं।

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

5. बनावट और सतह का उपचार: थॉमस कांस्य की सतह को विभिन्न तरीकों से उपचारित करते थे, कभी उसे चिकना और पॉलिश करते थे, तो कभी उसे खुरदुरा और बनावट वाला रखते थे, ताकि विषय वस्तु और भावना के अनुरूप प्रभाव उत्पन्न किया जा सके।

उन्होंने अपने करियर के दौरान कई महत्वपूर्ण कमीशन प्राप्त किए और वेल्श कला परिदृश्य में एक सम्मानित व्यक्ति बन गए। वे रॉयल कैमब्रियन अकादमी और सोसाइटी ऑफ़ पोर्ट्रेट स्कल्पटर्स के सदस्य भी थे।

महत्वपूर्ण सृजन

रॉबर्ट थॉमस ने अपने लंबे और उत्पादक करियर में कई यादगार मूर्तियाँ बनाईं। उनकी कुछ सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण कृतियों में शामिल हैं:

- "नाय बेवन" (Aneurin Bevan Statue, कार्डिफ़, 1987): क्वीन स्ट्रीट, कार्डिफ़ के केंद्र में स्थित राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा (NHS) के संस्थापक और प्रसिद्ध वेल्श राजनेता ऐन्युरिन बेवन की यह कांस्य प्रतिमा रॉबर्ट थॉमस की सबसे प्रतिष्ठित सार्वजनिक कलाकृतियों में से एक है। यह प्रतिमा बेवन को एक जोशीले वक्ता के रूप में, भाषण देते हुए या बहस करते हुए दर्शाती है। थॉमस ने बेवन के व्यक्तित्व की शक्ति और उनके विचारों की दृढ़ता को सफलतापूर्वक चित्रित किया है। प्रतिमा का आधार वेल्श स्लेट से बना है और इस पर बेवन के प्रसिद्ध उद्धरण अंकित हैं। यह न केवल एक राजनेता का स्मारक है, बल्कि यह वेल्श समाजवाद और सामाजिक न्याय के आदर्शों का भी प्रतीक है। इस कृति को व्यापक रूप से सराहा गया और यह कार्डिफ़ शहर का एक महत्वपूर्ण लैंडमार्क बन गई है।
- "द गर्ल" (The Girl, कॉलेज ग्रीन, ब्रिस्टल, 1987): ब्रिस्टल कैथेड्रल के पास कॉलेज ग्रीन पर स्थापित "द गर्ल" एक लोकप्रिय और प्रिय कांस्य प्रतिमा है। यह एक युवा लड़की को दर्शाती है जो आराम से घास पर लेटी हुई है, अपने सिर को हाथों पर टिकाए हुए, जैसे किसी सपने में खोई हो या बस आराम कर रही हो। यह मूर्ति अपनी सादगी, शांति और मानवीयता के लिए जानी जाती है। थॉमस ने लड़की की आकृति को कोमलता और स्वाभाविकता के साथ गढ़ा है। यह कृति शहरी वातावरण में एक शांत और चिंतनशील स्थान प्रदान करती है और अक्सर लोगों को इसके पास रुककर बातचीत करते या आराम करते देखा जा सकता है।
- "माइनर्स" (Miners, विभिन्न स्थान): खनन उद्योग साउथ वेल्स की पहचान का एक अभिन्न अंग रहा है, और रॉबर्ट थॉमस ने अपनी कई कृतियों में खनिकों के जीवन और श्रम को श्रद्धांजलि अर्पित की। इन मूर्तियों में अक्सर खनिकों को उनके औजारों के साथ, काम पर जाते हुए या थके हुए लेकिन गरिमापूर्ण मुद्रा में दर्शाया जाता है। ये मूर्तियाँ न केवल एक उद्योग का दस्तावेजीकरण करती हैं, बल्कि वे उन श्रमिकों के साहस, दृढ़ता और सामुदायिक भावना का भी सम्मान करती हैं जिन्होंने इस कठिन पेशे में अपना जीवन समर्पित कर दिया। उदाहरण के लिए, न्युब्रिज में स्थित "चार्टिस्ट माइनर" (Chartist Miner) प्रतिमा उल्लेखनीय है।
- "मदर एंड चाइल्ड" (Mother and Child) श्रृंखला: थॉमस ने मातृत्व और माँ और बच्चे के बीच के विशेष बंधन को दर्शाती हुई कई मूर्तियाँ बनाईं। इन कृतियों में कोमलता, सुरक्षा और प्रेम की भावनाएँ प्रमुख होती हैं। वे अक्सर माँ को अपने बच्चे को गले लगाते हुए या उसकी देखभाल करते हुए दिखाते हैं, जो सार्वभौमिक मानवीय अनुभवों को छूता है।
- अन्य पोर्ट्रेट बस्ट और सार्वजनिक मूर्तियाँ: इनके अतिरिक्त, थॉमस ने कई प्रसिद्ध व्यक्तियों के पोर्ट्रेट बस्ट बनाए, जिनमें वेल्श कवि डायलन थॉमस और अभिनेता रिचर्ड बर्टन शामिल हो सकते हैं (सटीक सूची के

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

लिए और शोध आवश्यक होगा)। उन्होंने वेल्स और इंग्लैंड के अन्य शहरों के लिए भी कई सार्वजनिक मूर्तियाँ और स्मारक डिजाइन किए, जिनमें से प्रत्येक उनकी विशिष्ट शैली और मानवीय दृष्टिकोण को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, स्वानसी में उनकी कुछ कृतियाँ स्थापित हैं।

उनकी कलाकृतियाँ अक्सर स्थानीय समुदायों के साथ गहरे संबंध स्थापित करती थीं, क्योंकि वे उन कहानियों और पात्रों को दर्शाती थीं जिनसे लोग खुद को जोड़ सकते थे।

कला जगत में योगदान और मान्यता

रॉबर्ट थॉमस का वेल्श कला जगत में महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने न केवल अपनी मूर्तियों के माध्यम से वेल्श संस्कृति और पहचान को बढ़ावा दिया, बल्कि उन्होंने युवा कलाकारों को भी प्रेरित किया। उनकी सार्वजनिक कलाकृतियाँ शहरी परिदृश्यों का अभिन्न अंग बन गईं, कला को आम जनता के दैनिक जीवन में लाती रहीं। उन्हें अपनी कलात्मक उपलब्धियों के लिए कई सम्मान और पुरस्कार मिले। रॉयल कैमब्रियन अकादमी के सदस्य के रूप में, उन्होंने वेल्श कला के विकास में सक्रिय भूमिका निभाई। उनकी प्रदर्शनियाँ वेल्स और उससे बाहर आयोजित की गईं, और उनकी कृतियाँ कई महत्वपूर्ण निजी और सार्वजनिक संग्रहों में शामिल हैं। उन्हें विशेष रूप से उनकी क्षमता के लिए सराहा जाता था कि वे कांस्य जैसी कठोर सामग्री में मानवीय भावनाओं और कोमलता को कैसे उकेर सकते थे।

11 मई, 1999 - एक कलात्मक यात्रा का समापन

11 मई, 1999 को 72 वर्ष की आयु में रॉबर्ट थॉमस का निधन हो गया। उन्होंने अपने पीछे एक समृद्ध और विविध कलात्मक विरासत छोड़ी, जो मानवीय अनुभव की गहराई और वेल्श भावना की जीवंतता को दर्शाती है। उनकी मूर्तियाँ आज भी वेल्स और ब्रिटेन के सार्वजनिक स्थानों पर खड़ी हैं, जो उनके कौशल, उनकी दृष्टि और कला के प्रति उनके जुनून की स्थायी गवाही देती हैं। उनकी मृत्यु ने समकालीन ब्रिटिश मूर्तिकला में एक महत्वपूर्ण आवाज को खामोश कर दिया, लेकिन उनकी कला जीवित है।

निष्कर्ष

11 मई की तिथि दो भिन्न कलात्मक पथों पर चलने वाले मूर्तिकारों - जॉर्ज मैटलैंड स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस - की स्मृतियों को हमारे सामने लाती है। स्टेनली ने अपनी कला से हॉलीवुड के ग्लैमर और अमेरिकी सपनों को आकार दिया, उनकी ऑस्कर प्रतिमा आज भी विश्व सिनेमा की सर्वोच्च उपलब्धि का प्रतीक है, और हॉलीवुड बाउल की "म्यूज़" लॉस एंजिल्स की सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा है। उनकी कला में आर्ट डेको की चमक और शास्त्रीयता का संतुलन था, जो उनके समय के सौंदर्यबोध को दर्शाता है।

दूसरी ओर, रॉबर्ट थॉमस ने अपनी वेल्श जड़ों से प्रेरणा लेते हुए मानवीय भावनाओं और सामाजिक यथार्थ को अपनी कांस्य मूर्तियों में ढाला। ऐन्युरिन बेवन की उनकी प्रतिमा या ब्रिस्टल की "द गर्ल" जैसी कृतियाँ आम लोगों से संवाद स्थापित करती हैं और कला को सार्वजनिक जीवन का हिस्सा बनाती हैं। उनकी कला में सहानुभूति, गरिमा और सामुदायिक भावना की गहरी छाप है।

भले ही स्टेनली की प्रसिद्धि ऑस्कर के माध्यम से वैश्विक स्तर पर फैली हो और थॉमस का कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से वेल्स और ब्रिटेन रहा हो, दोनों ही कलाकारों ने मूर्तिकला के माध्यम से अपने समय और समाज को प्रतिबिंबित किया। दोनों ने ही मानव रूप को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और अपनी कृतियों के

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , *खंड* 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

माध्यम से स्थायी प्रभाव छोड़ा। स्टेनली ने जहाँ भव्यता और प्रतिष्ठित प्रतीकों का निर्माण किया, वहीं थॉमस ने मानवीय संवेदनाओं और स्थानीय पहचान को मूर्त रूप दिया।

11 मई को इन दो मूर्तिकारों का निधन हमें यह याद दिलाता है कि कला समय की सीमाओं को पार कर जाती है। उनकी मूर्तियाँ आज भी दर्शकों से संवाद करती हैं, कहानियाँ कहती हैं और भावनाओं को जगाती हैं। जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस की कलात्मक विरासत मूर्तिकला की उस शाश्वत शक्ति का प्रमाण है जो संस्कृति को समृद्ध करती है, इतिहास को संरक्षित करती है और मानवीय आत्मा को प्रेरित करती है। उनकी कृतियाँ हमें यह सिखाती हैं कि कैसे एक कलाकार अपने माध्यम के द्वारा न केवल सौंदर्य का सृजन करता है, बल्कि अपने समाज और समय का एक महत्वपूर्ण भाष्यकार भी बन जाता है। इन दो महान कलाकारों की स्मृति और उनका योगदान कला जगत में सदैव जीवित रहेगा।